RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

AI का सामाजिक व्यवहार पर प्रभावः सांस्कृतिक परिवर्तन और चुनौतियाँ

डॉ. अर्चना गोदारा, सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राज. एन. एम. महाविद्यालय, हनुमानगढ
Email-Archanamps@gmail.com

सार

वर्तमान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को सबसे बड़ी खोज माना जा रहा है और इसका मानव समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। AI ने ब्यक्ति की सोच, कार्य एवं व्यवहार को बदल कर रख दिया है। यही कारण है कि वर्तमान की सबसे बड़ी समस्या भी यही प्रमुख खोज बन गई है। इसका प्रभाव केवल तकनीक पर ही नहीं बल्कि मानव के व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार दोनों पर भी समान रूप से पड़ा है। मनुष्य अब सोशल मीडिया पर अपना बहुत अधिक समय व्यतीत करने लगा है। इसलिए वह अब बनावटी दुनिया में अधिक विश्वास रखने लगा है। व्यक्ति के सामाजिक संबंध एवं संपर्क अब फेसबुक तथा व्हाट्सएप तक ही सीमित रह गए हैं। इसके प्रभाव स्वरूप मनुष्य के जीवन में जटिलताएं और तनाव बहुत अधिक बढ़ गये है। यह अध्ययन AI के सामाजिक व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों, सांस्कृतिक परिवर्तन, और उससे उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण करता है।

बीज शब्द– तकनीक, परम्परा, संस्कृति, नैतिकता।

प्रस्तावना –

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने मानव जीवन और मानव समाज के हर पहलू को प्रभावित किया है। चाहे वह संचार हो, शिक्षा हो या कार्यस्थल की संरचना। डिजिटल युग में AI केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं रहा, बल्कि यह एक सांस्कृतिक शक्ति भी बन गया है जो सामाजिक व्यवहार को आकार दे रहा है। क्यों कि मानव प्रत्येक कार्य के लिए AI का सहारा लेने लगा है। चाहे वह रचनात्मक कार्य हो या व्यवहार संबंधी कार्य। AI के माध्यम से स्मार्टफोन वर्चुअल असिस्टेंट और स्मार्ट होम डिवाइस जीवन को बहुत अधिक सुविधाजनक बना रहे हैं, परंतु इसका जीवन में विपरित प्रभाव भी पङ रहा है। स्वंचालान के कारण कई पारंपरिक नौकरियों जैसे कि डाटा एंट्री, मैन्युफैक्चरिंग आदि में व्यक्तियों की आवश्यकता अब कम होने लगी है। विशेष रूप से कम कौशल वाली नौकरियों के लिए यह बहुत बड़ा खतरा बन गया है। खतरनाक या दोहरावा वाले कार्यों में AI की मदद से व्यक्ति की सुरक्षा बढ़ रही है। परंतु AI आधारित डाटा संग्रहण से व्यक्ति की जानकारी आं तथा गोपनीयता में सेंध भी लग रही है। यही कारण है कि अत्यधिक तकनीक पर निर्भरता से सामाजिक अलगाव और मानसिक तनाव जैसी समस्याएं अब बहुत अधिक बढ़ रहे हैं। AI आधारित सोशल मीडिया व्यक्तियों को नकारात्मक खबरों और गलत सूचनाओं की ओर आकर्षित कर रहे हैं तथा व्यक्ति उन्हें अपने से संबंधित करने लगता है जिससे उनके अंदर अवसाद बढ़ने लगता है।

सामाजिक व्यवहार पर AI का प्रभाव –

AI ने सामाजिक व्यवहार में कई बदलाव लाए हैं। AI के प्रभावस्वरूप व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार बदला है। वह सामाजिक संपर्क कम रखने लगा है तथा तकनीकी गैजेट्स का प्रयोग बहुत अधिक करने लगा है। उसे व्यक्तियों से अधिक तकनीक पर भरोसा है तथा उसे अन्य व्यक्तियों की तुलना में तकनीकी यंत्रों के साथ समय व्यतीत में मजा आने लगा है। इसी का प्रभाव है कि व्यक्ति में संवेदनाएं कम होने लगी हैं तथा वे भावात्मक रूप से वह अन्य व्यक्तियों से नहीं जुड़ पाते हैं । सामान्यतः व्यक्तियों का व्यवहार भी मशीन की तरह ही होने लगा है जिसमें भावनाएं महत्व नहीं रखती बल्कि उद्देश्य एवं लाभ महत्व रखते हैं। इसीलिए मानव के सामाजिक व्यवहारों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

संवाद और संचार शैली में परिवर्तन –

AI आधारित सोशल मीडिया प्लेटफार्म, चौटबॉट्स, और वर्चुअल असिस्टेंट ने संवाद को अधिक त्वरित और संक्षिप्त बना दिया है। या यू कहा जा सकता है कि बहुत कम कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप, गहरी बातचीत और व्यक्तिगत संपर्क में कमी आयी है। उदाहरण स्वरूप युवा पीढ़ी में इमोजी और जीआईएफ का उपयोग बढ़ा है, जिससे भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका बदल गया है। इन तकनीकों से भाव तो व्यक्त किए जाते हैं परंतु उसमें आवाज नहीं होती। यानी कि बिना कहे ही बहुत कुछ कह

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed,
Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

दिया जाता है। इसका प्रभाव यह पड़ा है कि अब प्रभाव युक्त बोलने वाले व्यक्तियों की संख्या बहुत कम होती जा रही है। विशेष अवसरों पर व्यक्ति अपने भावों को व्यक्त नहीं कर पाते क्योंकि संवाद के अभाव में वे सही शब्दों का प्रयोग नहीं कर पाते।

सामाजिक संबंधों का पुनर्गठन –

AI आधारित डेटिंग एप्लिकेशन, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, और वर्चुअल कम्युनिटी ने पारंपरिक सामाजिक संबंधों को पुनर्परिभाषित किया है। लोग अब भौगोलिक सीमाओं से परे संबंध बना रहे हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान में वृद्धि हुई है। लेकिन इसके साथ ही सामाजिक अलगाव और अकेलेपन की समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। दिखावे और आगे बढ़ाने की प्रवृत्ति ने व्यक्ति को लालची बना दिया है और वह कुछ नए चमत्कार के इंतजार में रहता है जिसके प्रभाव स्वरूप वह अपने प्रभाव क्षेत्र या नजदीकी व्यक्तियों से संबंध कम करता जा रहा है तथा सोशल मीडिया के माध्यम से बाहर के अनजान व्यक्ति जो की बहुत स्मार्ट दिखते हैं या उच्च पद पर बैठे हैं। उनके साथ संपर्क बढ़ाता जा रहा है, जिसके प्रति विश्वसनीयता बहुत कम है। इसलिए व्यक्ति को भावात्मक लगाव कम मिलता है और धोखा मिलने की संभावनाएं बहुत अधिक बढ़ जाती हैं। यही कारण है कि वर्तमान में आत्महत्याओं की दर बढने लगी है।

सांस्कृतिक परिवर्तन –

AI ने सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी नवीनता की तरफ आकर्षित होती है और AI उनके लिए एक स्रोत है जो सरल एवं नवीन संस्कृति से परिचय करवा रहा है। AI, शिक्षा और सोशल मीडिया का प्रभाव यह है कि व्यक्ति अब परंपराओं का जबर्दस्ती पालन नहीं करना चाहता। वह परंपराओं को जीवन में बाधा के रूप में नहीं देखना चाहता। वह सुविधाजनक परंपराओं में विश्वास करने लगा है। इसलिए वह अन्य संस्कृति एवं सभ्यताओं से परंपराओं का देखा – देखी प्रयोग करने लगा है । परंपराओं को बाधक नहीं साधन के रूप में प्रयोग करने लगा है और जीवन की सफलता हेतु जो उसे उचित प्रतीत होता है, उसी परंपरा को वह उचित मानने लगा है। सोशल मीडिया और AI ने वैश्वीकरण को बढ़ावा दिया है। इसी का प्रभाव है कि विभिन्न देशों की संस्कृतियों का आपस में विलय होने लगा है और मनुष्य अपनी सुविधा के अनुसार उनका प्रयोग करने लगा।

उपभोक्ता संस्कृति और AI –

AI आधारित अनुशंसा प्रणालियाँ (Recommendation Systems) उपभोक्ताओं की पसंद और आदतों को प्रभावित कर रही हैं। नेटफ्लिक्स, अमेजन, और स्पॉटिफाई जैसे प्लेटफार्म उपभोक्ताओं को उनके पूर्व व्यवहार के आधार पर सामग्री सुझाते हैं, जिससे सांस्कृतिक विविधता में कमी आ रही है और 'इको चेंबर' (Echo Chamber) का निर्माण हो रहा है। वर्तमान की बढ़ती तकनीक से मनुष्य इतना अधिक प्रभावित हो गया है कि विभिन्न प्रकार की मनोरंजन ऐप की उसे इस प्रकार से लत लग गई है कि वह इन संसाधनों के बगैर अब नहीं रह सकता है। इसका प्रभाव मनुष्य की सोचने और समझने की शक्ति पर भी पड़ा है। वह तकनीक पर इतना अधिक निर्भर हो गया है कि स्वयं के मस्तिष्क को अधिक प्रयोग में नहीं लगा पाता। वर्तमान में वह स्वयं की संस्कृति को पूर्ण रूप से नहीं जानता है। वह बहुत सारी संस्कृतियों के संपर्क में आने के कारण मिली जुली संस्कृति का शिकार हो गया है। परंतु सबसे अधिक प्रभाव व्यक्ति पर बाजार का पड़ा है। इसलिए मनुष्य अब कोई भी कार्य किसी अन्य के सहयोग से नहीं करना चाहता बल्कि पूंजीवाद के प्रभाव स्वरूप पैसे देकर कार्य करवाना चाहता है जिसके लिए किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा वह अपने आपको स्वतंत्रता तथा आत्मनिर्भर समझता है।

कला और रचनात्मकता पर AI का प्रभाव –

AI के द्वारा जनित कला, संगीत और साहित्य आदि ने रचनात्मकता की पारंपरिक परिभाषा को चुनौती दी है। यह सांस्कृतिक उद्योग में एक नई क्रांति ला रहा है, लेकिन इसके साथ ही यह प्रश्न भी उत्पन्न हो रहा है कि क्या AI के द्वारा उत्पन्न रचनात्मकता मानव मूल्यों और भावनाओं को सही मायने में व्यक्त कर सकती है? वर्तमान में व्यक्ति कम से कम मेहनत में अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहता है। इस स्वार्थ में वह AI का प्रयोग करता है। AI के प्रयोग से बहुत सारी उत्तम प्रकार की सामग्री मानव को प्राप्त हो जाती हैं परंतु व्यक्ति की वास्तविक कलात्मकता पर प्रश्न उठता है कि कहीं भविष्य में असली कलाकार गुमनाम ना हो जाये। बिना विचार और मेहनत के कलाकार बनना असंभव है और AI का उसमे

बहुत सहयोग भी रहेगा। AI मानव जनित एक तकनीक है, जिसकी सीमाएं है। यह मानव मस्तिष्क की तुलना में कम विकसित मानी जा सकती है क्योंकि मानव मस्तिष्क की कोई सीमा नहीं है।

चुनौतियाँ –

AI के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों के साथ – साथ विभिन्न नैतिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी उभर रही हैं जो AI के प्रयोग पर संदेह प्रकट करती हैं:

गोपनीयता और डेटा सुरक्षा –

एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), गोपनीयता एवं डेटा सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि AI प्रणाली बड़ी मात्रा में डेटा का सभी एप्लिकेशन उपयोग से पहले निजी डेटा लेने की अनुमति मांगती है उसी के उपरांत ही वह कार्य प्रारंभ करती है। इसी सुविधा का प्रयोग AI प्रणाली के द्वारा व्यक्तिगत डेटा का व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा हैं, जिससे गोपनीयता के उल्लंघन की संभावनाएं बहुत अधिक बढ़ गई है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर डेटा के दुरुपयोग और व्यक्ति की निगरानी के मामले चिंता का विषय बने हुए हैं।

पूर्वाग्रह और भेदभाव –

AI एल्गोरिदम में मौजूद पूर्वाग्रह सामाजिक भेदभाव को बढ़ावा दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, जॉब पोर्टल्स पर AI आधारित भर्ती प्रणालियाँ कभी–कभी नस्ल, लिंग, या सामाजिक वर्ग के आधार पर भेदभाव करती हैं, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ती है। AI प्रणाली निश्चित सीमा होने के कारण पूर्व में दर्ज सामग्री का ही प्रयोग करती है। AI प्रणाली का स्वयं का मस्तिष्क नहीं है। अतः वह प्रश्न की खोज का उत्तर केवल उपलब्ध सामग्री एवं नियमों के अनुरूप ही देती है जिसमें प्राप्त सामग्री पूर्ण रूप से उचित हो, यह आवश्यक नहीं है। वह मनुष्य की तरह वातावरण को देखकर प्रतिउत्तर नहीं देती है।

नैतिकता और उत्तरदायित्व –

AI के निर्णयों की पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व एक बड़ी चुनौती है। जब AI द्वारा कोई नैतिक रूप से विवादास्पद निर्णय लिया जाता है, तो यह प्रश्न उठता है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन होगा – AI डेवलपर, उपयोगकर्ता, या स्वयं AI ? क्योंकि AI प्रणाली केवल सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री का ही प्रयोग करती है तथा बनाए गए नियमों एवं सीमाओं में ही कार्य करती है। उचित या सही का संतुलन बनाना AI प्रणाली द्वारा स्वयं नहीं किया जा सकता। वह तो केवल मांगी गई जानकारी को ही उपलब्ध करवाता है।

संभावनाएँ और समाधान –

AI प्रणाली से बहुत से कार्य सरलता से करने संभव हो रहे हैं परंतु इसके अनुचित प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं। AI के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का सकारात्मक उपयोग करने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते हैं –

नैतिक AI का विकास –

AI की बनावट और कार्यान्वयन में नैतिकता को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसके लिए 'एथिकल बाय डिजाइन' (Ethical by Design) दृष्टिकोण अपनाया जा सकता है, जिसमें गोपनीयता, पारदर्शिता, और निष्पक्षता को शामिल किया जाए। AI मानव की सुविधा के लिए बनाई गई एक प्रणाली है। अतः व्यक्ति निजता एवं सुरक्षा का ध्यान रखा जाना अति आवश्यक है। इसकी रचना करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि नैतिकता एवं पारदर्शिता बनी रहे। यह सुरक्षा सामाजिक वातावरण में मधुरता बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता –

AI को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनाना आवश्यक है, ताकि यह विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों के लिए उपयुक्त और सम्मानजनक हो। मनुष्य इसका प्रयोग करते समय डरे नहीं, वह भय मुक्त तथा आशंका रहित होकर इसका प्रयोग कर सके।

सामाजिक जागरूकता और शिक्षा –

मानव व्यवहार, आवश्यकता, वातावरण, सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक परिवर्तन के संदर्भ में AI के

प्रभावों को समझने के लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। यह कार्यक्रम AI प्रणाली को विस्तार से एवं पूर्ण रूप से समझने में मददगार साबित होंगे। अधूरे ज्ञान के कारण तकनीक का प्रयोग व उपयोग उचित प्रकार से नहीं हो पाता है। शिक्षा जागरूकता एवं ज्ञान प्रदान करने का सबसे सस्ता एवं सरल संसाधन है। अतः शिक्षा के माध्यम से जागरूकता फैलाई जानी चाहिए।

निष्कर्ष –

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने न केवल तकनीकी क्षेत्र में बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी बहुत गहरा प्रभाव डाला है। यह संवाद, संस्कृति, सामाजिक संबंध, उपभोक्ता संस्कृति और रचनात्मकता को भी नए आयाम दे रहा है, परंतु इसके साथ ही गोपनीयता, भेदभाव,निजता और नैतिकता से संबंधित चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। इस संदर्भ में, AI के सामाजिक प्रभावों को समझने और प्रबंधित करने के लिए एक संतुलित और नैतिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। साथ ही विभिन्न माध्यमों के द्वारा नागरिकों को AI के सही प्रयोग के बारे में समझना होगा तथा उनके अंदर इसके प्रयोग के संबंध में व्याप्त भय को दूर करना होगा। AI सुविधा हेतु बनाई गई एक तकनीक है और सफलता हेतु गोपनीयता एवं पारदर्शिता का होना अतिआवश्यक है।

संदर्भ –

1. शर्मा, डॉ. सुनील कुमार, "Artificial Intelligence : एक अध्ययन", वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024
2. चक्रवर्ती और शर्मा, उत्पल और रोहित : आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सर्वजन हितायः सर्वजन सुखाय : बीपीबी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2020
3. बफना, प्रा. आर. एम. : "कृत्रिम बुद्धिमत्ता", टेक–नियो पब्लिकेशन्स, मुंबई, 2024
4. कुमार, अजय : "डिजिटल इंडिया : भारत में शासन और विकास का भविष्य", प्रभात प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2019
5. अग्रवाल, डॉ. गोपाल कृष्ण : भारतीय समाज एवं संस्कृति, SBPD पब्लिशिंग हाउस, आगरा, 2015
6. द्विवेदी,राकेश नारायण : साहित्यिक शोध में समय, समाज और संस्कृति, नोटिओन प्रेस चेन्नई, 2020
7. सी.एस.आई.आर. गोल्डन जुबली सीरीज, "कृत्रिम बुद्धि", एक्सोटिक इंडिया आर्ट, नई दिल्ली, 2023